लाइबनित्ज का अनेकतत्ववाद (Pluralism)

अनेकतत्ववाद वह तत्वमीमांसात्मक सिद्धांत है जो संख्या की दृष्टि से मूलभूत तत्व को अनेकों मानता है| स्वरूप की दृष्टि से वह कुछ भी हो सकता है- जड़ द्रव्य के स्वरूप का, या चेतन स्वरूप का या दोनों से तटस्थ स्वरूप का| अनेकतत्ववाद के अनुसार विश्व की मूलभूत अनेकता तथा विविधता मौलिक है, उसे किसी स्तर पर एक या दो में परिवर्तित नहीं किया जा सकता| यह सिद्धांत उस एकतत्ववादी सिद्धांत का विरोधी है जो यह मानता है कि विश्व की अनुभूत विविधता प्रतीति है तथा मूलभूत तत्व एक ही है| इस एकतत्ववादी सिद्धांत के विरुद्ध अनेकतत्ववाद मानता है कि अनेकता मौलिक है| विश्व के आधारभूत तत्व एक दूसरे से अलग और स्वतंत्र हैं तथा किसी को किसी में परिवर्तित नहीं किया जा सकता| सभी समान रूप से आधारभूत हैं| विश्व की वस्तुएं इन अनेकों तत्वों के द्वारा निर्मित हैं तथा इन तत्वों का समूह है, उनमें से किसी को किसी के अंतर्गत अंतरभूत नहीं किया जा सकता| विश्व की वस्तुओं में मात्र बाह्य संबंध है जो कभी भी टूट सकता है और फिर कायम हो सकता है|

- लाइबनित्ज बहूतत्ववादी विचारधारा के पक्षधर हैं| लाइबनित्ज बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे और उनमें असाधारण स्मरण शक्ति थी| चिदणुशास्त्र (Monadology) उनकी प्रसिद्ध दार्शनिक पुस्तक है| देकार्त और स्पिनोजा के समान लाइबनित्ज बुद्धिवादी हैं| उन्होंने देकार्त के द्वैतवाद और स्पिनोजा के अद्वैतवाद के विपरीत अनेकतत्ववाद के विचार को प्रतिष्ठित किया| देकार्त ईश्वर, चित् और अचित् रूप तीन तत्वों की प्रतिष्ठा की| स्पिनोजा चित् और अचित् को गुण मान कर अद्वैत तत्व की प्रतिष्ठा की| द्रव्य तत्व की परिभाषा में देकार्त और स्पिनोजा दोनों सहमत हैं| दोनों के अनुसार द्रव्य का लक्षण स्वतंत्र और निरपेक्ष सकता है| लाइबनित्ज इस परिभाषा से असंतुष्ट हैं| देकार्त चित्और अचित् को दो परस्पर विरोधी द्रव्य मानते हैं| चित् का गुण चैतन्य और अचित् का गुण विस्तार मानते हैं| चैतन्य और विस्तार में विरोध मानते हैं| जो चेतन है, वह अचेतन नहीं हो सकता और जो अचेतन है, चेतन नहीं हो सकता| लाइबनित्ज इसका विरोध करते हैं और कहते हैं कि चेतन आत्म द्रव्य को अचेतन और उपचेतन प्रतीतियां भी होती है | आत्मा की चार चितभूमियां है- स्वचेतन, चेतन, उपचेतन और अचेतन| इस प्रकार देकार्त का चित् अचित् का द्वैतवाद ध्वस्त हो जाता है| लाइबनित्ज के अनुसार केवल चैतन्य को ही आत्मा का गुण नहीं मान सकते| इसी प्रकार देकार्त की अचित संबंधी मान्यता भी दोषपूर्ण है| देकार्त ने विस्तार को ही अचित का गुण और गति तथा स्थिति को विस्तार का पर्याय माना है| लाइबनित्ज इसे गलत मानते हैं| प्रथम तो, देकार्त में गति का अर्थ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना है| इसमें अन्य प्रकार के परिवर्तन नहीं आते, जैसे सेब का पककर हरे रंग से लाल रंग में बदल जाना, जैसे बालक का युवक और युवक का वृद्ध होना आदि| द्वितीय, जब दो गतिशील पदार्थ एक दूसरे से टकराते हैं तो उनका वेग कम हो जाता है किंतु यदि पदार्थों का गुण विस्तार है तो उनका वेग या गति बढ़नी चाहिए| तृतीय, पदार्थों में कभी गति होती है, आर कभी स्थिति| किंतु निरंतरता के सिद्धांत(अविछिन्नता) के सिद्धांत के अनुसार गति या स्थिति में व्यवधान नहीं होना चाहिए| जब एक गतिशील पदार्थ रुक कर स्थिर हो गया, तब फिर उसमें दुबारा गति क्यों होती है? विस्तार से तो ऐसा नहीं हो सकता| अतः जड़ पदार्थों का विस्तार नहीं माना जा सकता| चतुर्थ, जहां विस्तार है वहां विभाग भी है, अतः यदि विस्तार जड़ पदार्थ का गुण है तो कोई जड़ पदार्थ मूलद्रव्य के अर्थ में सिद्ध ही नहीं हो सकेगा, क्योंकि मूलद्रव्य को अविभाज्य मानना पड़ेगा और विस्तार के कारण वह अविभाज्य हो नहीं पाएगा| इस प्रकार लाइबनित्ज देकार्त के तत्व संबंधी द्वैतवादी विचार या मत का खंडन किया| लाइबनित्ज के अनुसार ना तो आत्मा और जड़ दो विरुद्ध द्रव्य है और ना चैतन्य तथा विस्तार दो विरुद्ध गुण; और न केवल चैतन्य आत्मा का गुण है और न केवल विस्तार जड़ पदार्थ का|

  लाइबनित्ज स्पिनोजा के अद्वैतवाद का भी घोर विरोध किया| स्पिनोजा ने देकार्त के द्वैतवाद कहां खंडन करके चित् और अचित् को द्रव्य ना मान कर इन्हें गुण माना| स्पिनोजा ने द्रव्य के द्वैत को मिटाकर गुन के द्वैत को रहने दिया| स्पिनोजा भी चैतन्य और विस्तार नामक गुण को परस्पर भिन्न मानते हैं| लाइबनित्ज ने इसका खंडन तथा विरोध किया| लाइबनित्ज का आक्षेप है एक ही द्रव्य में चैतन्य और विस्तार जैसे विरोधी धर्म कैसे रह सकते हैं? फिर स्पिनोजा ने चेतन और जड़ जगत के संपूर्ण पदार्थों के व्यक्तित्व अथवा निजता को ही खत्म कर दिया और इनकी सत्ता को ही उड़ा दिया| लाइबनित्ज को यह अनुचित लगा| लाइबनित्ज कहते हैं देकार्त और स्पिनोजा दोनों ने द्रव्य का लक्षण को ठीक ठीक नहीं समझा| उन्होंने द्रव्य को दर्शन का केंद्र बनाया, यह ठीक किया| उन्होंने द्रव्य का लक्षण स्वातंत्र्य माना यह भी ठीक किया| परंतु उनकी गलती रह गई कि उन्होंने स्वातंत्र्य का अर्थ स्वतंत्र सत्ता समझा| यह ठीक नहीं| स्वातंत्र्य का अर्थ स्वतंत्र सत्ता नहीं, स्वतंत्र शक्ति है| अतः द्रव्य की परिभाषा ' द्रव्य है जिसकी स्वतंत्र सत्ता हो' ना होकर यह होनी चाहिए कि- ' द्रव्य वह है जिसमें स्वतंत्र शक्ति हो|' वस्तुत: शक्ति ही सत्ता है| सत्ता का अर्थ होना चाहिए ' अर्थ- क्रिया- सामर्थ्य'| जो अर्थ- क्रिया समर्थ है वही सत है| शक्त पदार्थ को ही द्रव्य कहा जा सकता है| जिसमें अपनी

स्वतंत्र शक्ति हो वही द्रव्य है| इस चित् अचित् रूप विश्व के प्रत्येक पदार्थ में कुछ ना कुछ अपनी शक्ति है, प्रत्येक पदार्थ की अपनी विशेषता है| अतः प्रत्येक पदार्थ, जिसमें अपनी शक्ति और विशेषता हो, द्रव्य कहलाने का पात्र है| लाइबनित्ज का द्रव्य है ' शक्तिमान विशेष'| देकार्त ने तीन द्रव्य माने थे और स्पिनोजा मात्र एक में घटा दिया था, किंतु लाइबनित्ज ने असंख्य द्रव्यों की कल्पना की| स्पिनोजा का ईश्वर खंड खंड होकर लाइबनित्ज के द्रव्यों में बिखर पड़ा| स्पिनोजा ने चेतन और जड़ पदार्थों की जिस सत्ता का अपहरण किया था, खंडन किया था, लाइबनित्ज ने वह उन्हें लौटा दी|

लाइबनित्ज ने अपने द्रव्य का नामांकरण ' चिदणु' (Monad) के रूप में किया| अपने 'चिदण' की कल्पना में लाइबनित्ज ने देकार्त के बुद्धिवाद से और जड़ पदार्थ विज्ञान के विचारों से सहायता ली है| देकार्त के स्वतंत्र सत्तावान द्रव्य को लाइबनित्ज ने स्वतंत्र शक्तिमान द्रव्य में और जड़ पदार्थ विज्ञान के जड़ परमाणु को चेतन परमाणु में परिवर्तित करके दोनों को एक में मिला दिया है| लाइबनित्ज का द्रव्य स्वतंत्र शक्तिमान चेतन परमाणु है| लाइबनित्ज ने गणित से और जड़ पदार्थ विज्ञान से सहायता ली है| गणित के बिंदु निरवयव और अविभाज्य हैं, किंतु वे तात्विक नहीं है, काल्पनिक है| जड़ पदार्थ विज्ञान के बिंदु अर्थात परमाणु दांत भी तो है, किंतु निरवयव और अविभाज्य नहीं| जड़ पदार्थ विज्ञान अपने परमाणुओं को निरवयव और अविभाज्य मानता है किंतु लाइबनित्ज उससे सहमत नहीं हैं| लाइबनित्ज के अनुसार जब परमाणुओं की आकाश में स्थिति है और जब वे जड़ है तो उनका विस्तार अवश्य होना चाहिए और जिसका विस्तार है उसका अवयवों में विभाग अवश्य होना चाहिए| लाइबनित्ज ने अपने चिदणु में इन दोनों प्रकार के बिंदुओं के गुणों का मिश्रण करके एक नए प्रकार के बिंदु की कल्पना की है| चिदणु में परमाणु की तात्विकता है, किंतु उसकी विभाज्यता और जड़ता नहीं| चिदणु मैं गणित के बिंदु की विभाज्यता है, किंतु उसकी काल्पनिकता और अचेतनता नहीं| लाइबनित्ज का चिदणु निरवयव , अविभाज्य, तात्विक और चेतन है| यह तात्विक बिंदु, द्रव्य बिंदु, या चिद-बिंदु है| यह शक्तिमान विशेष है| यह अपने शक्ति का स्वयं केंद्र है| यह अनादि, अनंत और नित्य है| विश्व में ऐसे असंख्य चिदणु हैं|

चिदणु की विशेषता एवं स्वरूप

प्रत्येक चिदणु विश्व के अन्य समस्त चिदणुओं को अपने भीतर प्रतिबिंबित करता है| ' समस्त विश्व' का अर्थ है ' समस्त चिदणु और उनके प्रतिबिंब' क्योंकि विश्व में चिदणुओं के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है| इस प्रकार लाइबनित्ज के अनुसार समस्त विश्व चिन्मय है| चैतन्य के अतिरिक्त विश्व में और किसी की सत्ता नहीं है| प्रत्येक चिदणु मैं समस्त विश्व ज्ञान रूप में समाया हुआ है| व्यष्टि में समष्टि का प्रतिबिंब है| अणु में विराट भरा पड़ा है| प्रत्येक चिदणु समस्त विश्व का एक जीवित दर्पण है|

चैतन्य के अतिरिक्त, चित् शक्ति के अतिरिक्त, अन्य कोई सत्ता नहीं है, ऐसा कह कर लाइबनित्ज ने स्पिनोजा का चैतन्य और विस्तार का गौण द्वैत भी समाप्त कर दिया| अब प्रश्न उठता है कि यदि चैतन्य के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं, तो इस जड़ जगत का क्या होगा? लाइबनित्ज का उत्तर है कि जड़ नामक कोई वस्तु नहीं है| जिसको जड़ समझते हैं वह गुप्त या सुप्त चैतन्य है| वह चैतन्य ही है, किंतु प्रकट नहीं है, सोया हुआ सा है, खोया हुआ है| लाइबनित्ज चैतन्य की चार भूमिया मानी है- स्वचेतन, चेतन, उप चेतन और अचेतन| अचेतन का अर्थ चेतना का अभाव नहीं, परंतु चेतना की कमी है| अचेतन का अर्थ है 'ईषत- चेतन'| यहां चेतन सुप्त या मूर्छित रहती है | उपचेतन में चेतना स्वप्नस्थित जैसी स्थिति रहती है| चेतन में चेतना जागृत रहती है| स्वचेतन में चेतना अपना स्व संवेदन करती है| अतः विश्व में चेतना के अतिरिक्त और कुछ नहीं है| अचेतन और उपचेतन को लाइबनित्ज ने लघु चेतना कहा है| चेतन सब समय स्वचेतन हो यह आवश्यक नहीं| लाइबनित्ज कहते हैं कि चेतनशून्य कुछ नहीं है|

प्रत्येक चिदणु व्यक्ति विशेष हैं| वह अपनी चितशक्ति का केंद्र है और उसकी अपनी विशेषता है| चित् शक्ति एक नहीं है जो अनेक चिदणुओं में अभिव्यक्त होती हैं| चित्तशक्ति अविभाज्य है| अतः वह खंड खंड होकर विभिन्न चिदणुओं में नहीं रह सकती| यदि एक ही अविभाज्य चित्तशक्ति की अनंत चिदणुओं मैं अभिव्यक्त मानी जाए, तो चिदणु शक्ति के आभास मात्र बन जाएंगे और उनका सत्यत्व नष्ट हो जाएगा जो लाइबनित्ज स्वीकार कभी नहीं करते| इसलिए लाइबनित्ज प्रत्येक चिदणु के व्यक्तित्व और उसकी विशेषता को बहुत अधिक महत्व दिया है| प्रत्येक चिदणु मैं अपनी स्वतंत्र और अविभाज्य शक्ति है| चिदणुओं मेहता क्विक में दिया मौलिक स्वरूप भेद लाइबनित्ज को मान्य नहीं है, इसलिए प्रत्येक चिदणु की शक्ति को, स्वतंत्र और अविभाज्य मानते हुए भी, मौलिक स्वरूप की दृष्टि से, समान अर्थात एक-सी('एक' ही नहीं) मानते हैं| प्रत्येक चित अनु, अपनी स्वतंत्र सत्ता या शक्ति रखते हुए भी, अपने मौलिक स्वरूप में, अन्य समस्त चिदणुओं के समान हैं| चिदणुओं मैं संख्या का भेद है, मौलिक स्वरूप का भेद नहीं है| प्रत्येक चित अनु के विशिष्ट व्यक्तित्व पर लाइबनित्ज ने बहुत बल दिया है| प्रत्येक चिदणु अपने आप में पूर्ण हैं| उसकी अपनी

निरपेक्ष चित् शक्ति है| वह अपनी सत्ता या शक्ति के लिए, ईश्वर के अतिरिक्त अन्य किसी पर निर्भर नहीं| चिदणु मैं कोई छिद्र या खिड़कियां नहीं जिनमें होकर कोई वस्तु भीतर से बाहर जा सके या बाहर से भीतर आ सके| चिदणु छिद्ररहित या गवाक्षहीन हैं| एक दूसरे को प्रभावित नहीं कर सकते| प्रभावित करने की आवश्यकता भी नहीं है, क्योंकि प्रत्येक चिदणु अपने आप में पूर्ण है, क्योंकि प्रत्येक चिदणु में समस्त विश्व बीज रूप में अर्थात ज्ञान रूप में विद्यमान है|